International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

उत्साही-गैरउत्साही व्यक्तित्व वाले दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के आत्मप्रभावकारिता का अध्ययन

श्रीमती आभा शर्मा[1], डॉ.मनीषा वर्मा[2]

[1]सहायक प्राध्यापक, शिक्षा, खालसा कॉलेज, दुर्ग
[2]सहायक प्राध्यापक, शिक्षा, खालसा कॉलेज, दुर्ग, (छ.ग.)

सारांश:-

वर्तमान शिक्षा पद्धति का प्रमुख केंद्र बिन्दु बालक है और शिक्षा नीति 2020 ने सभी बालकों के क्षमता की परवाह ना करते हुए शिक्षा तक समान पहुँच सुनिश्चित करने के लिए समावेशी शिक्षा को महत्वपूर्ण बताया है। शिक्षा वह शस्त्र है जो बालक के समस्त कमियों को दूर करते हुए सबल बनाती है। अतः दृष्टिबाधित बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु उनके व्यक्तिव अनुरूप उनके आत्मप्रभावकारिता का अध्ययन आवश्यक है। प्रस्तुत शोध में उत्साही-गैरउत्साही व्यक्तित्व वाले दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के आत्मप्रभावकारिता का अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य शासकीय एवं अनुदान प्राप्त आवासीय विद्यालय में अध्ययन करने वाले 150 (75 बालक + 75 बालिका) विद्यार्थियों को उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन विधि द्वारा चुना गया। दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को मापने के लिए महेश भार्गव द्वारा निर्मित (संशोधित) **आयामी व्यक्तित्व मापनी (2017)** का और आत्मप्रभावकारिता के मापन के लिए सरिता दहिया एवं निर्मला कुमारी द्वारा निर्मित **विद्यार्थी आत्मप्रभावकारिता मापनी (2022)** का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के सांख्यिकी विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं द्विदिश प्रसरण विश्लेषण तकनीक का प्रयोग किया गया । अध्ययन के परिणाम में उत्साही-गैरउत्साही व्यक्तित्व वाले दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के आत्मप्रभावकारिता पर सार्थक प्रभाव पाया गया किन्तु लिंग एवं इनकी अन्तःक्रिया का पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया।

मुख्य शब्द : दृष्टिबाधित विद्यार्थी, विद्यार्थी आत्मप्रभावकारिता , आयामी व्यक्तित्व

परिचय :-

2011 की जनगणना के अनुसार विश्व की 21.9 % दृष्टिबाधित व्यक्ति भारत में निवास करते है और

देश के विकास में सामान्य व्यक्ति के अनुरुप दृष्टिबाधित व्यक्ति का भी समान योगदान होता है। NEP 2020 भी समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देता है जिसके अंतर्गत सब के लिए समान शिक्षा को प्रोत्साहित किया है । इस दृष्टि से दृष्टिहीनता कोई अभिशाप या कमी नहीं आपितु एक विचार है जो स्नेह, अपनापन अच्छा परिवेश, प्रेम, सहयोग जैसे मानवीय व्यवहार जैसे सकारात्मकता द्वारा दृष्टिबाधित व्यक्तियों के अंतर्निहित शक्ति को जगाया जा सकता है। दृष्टि, बालक के अधिगम हेतु प्रमुख संवेदी अंग होती है, बालक सुनने की तुलना में देख कर ज्यादा अनुभव प्राप्त करते है । दृष्टि का अभाव दृष्टिबाधितों के व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। पालक की असमर्थता व जानकारी में कमी उनके बालक को भी असमर्थ बनाती है। सामान्यजनों में दृष्टिहीनता, निराकरण एवं इनके शिक्षा के संदर्भ में जानकारी और जागरूकता की कमी दृष्टिहीन बालकों को उनके मानसिक आयु अनुरूप शिक्षा ग्रहण करने, जीविकोपार्जन करने में असमर्थ बनाती है। **गहलवत (2017)** ने सामान्य किशोरों में दृष्टिबाधित किशोरों की तुलना में सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य व बेहतर व्यक्तित्व लक्षण पाया। **केविकर एवं अन्य (2020)** खेल की अवधि व्यक्तित्व लक्षण को प्रभावित करती हैं। किन्तु विकलांग एवं गैर-विकलांग एथलिटों के बीच व्यक्तित्व में कोई अतंर नहीं पाया गया। **शंकर (2020)** ने दृष्टिहिनता से उपलब्धि को अप्रभावित पाया जबकि जन्मक्रम का व्यक्तित्व पर प्रभाव देखा गया। **संदू एवं अन्य (2021)** ने दृष्टिबाधितों के शिक्षा व व्यक्तित्व पर कोविड का प्रभाव पाया गया। **हुसैन (2023)** ने पाया कि दृष्टिबाधितों के व्यक्तित्व पर संगीत का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। **हेगले एवं अन्य (2017)** ने दृष्टिबाधित वयस्कों में शारीरिक गतिविधि एवं आत्मप्रभावकारिता के मध्य सकारात्मक सहसंबंध पाया गया। **कुमार (2017)** ने सामान्य एवं दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के आत्मप्रभावकारिता एवं इनके आयाम में सहसंबंध पाया। **जेनिफर एवं अन्य (2018)** परिवहन आत्मप्रभावकारिता के प्रभाव से दृष्टिबाधितों के रोजगार की संभावना में वृद्धि हुई। **माधवी एवं वेणुकापल्ली (2018)** ने सामान्य एवं दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के तार्किक गणितीय क्षमता का आत्मप्रभावकारिता के साथ सकारात्मक सहसंबंध पाया। **मोरदी एवं समदी (2023)** ने गैरएथलीट की तुलना में एथलीट दृष्टिबाधित व्यक्तियों के आत्मप्रभावकारिता और आत्मसम्मान में अधिकता पाई।

उद्देश्य

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के आयाम उत्साही - गैरउत्साही, लिंग एवं इनकी अन्तःक्रिया का आत्मप्रभावकारिता पर पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना

H_{0-1} दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के आयाम उत्साही - गैरउत्साही, लिंग एवं इनकी अन्तःक्रिया

का आत्मप्रभावकारिता पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा

अध्ययन की परिसीमाएँ

- प्रस्तुत शोध छत्तीसगढ़ राज्य के आवासीय विद्यालय में अध्ययन करने वाले दृष्टिबाधित विद्यार्थियों तक सीमित है ।
- अध्ययन में प्रदत्तों का संकलन उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श विधि द्वारा किया गया व अध्ययन 150 दृष्टिबाधित बालक व बालिकाओं तक सीमित है।
- प्रस्तुत शोध दृष्टिबाधित विद्यार्थियों जिनकी आयु **16** से **18** वर्ष है के **उत्साही - गैरउत्साही,** व्यक्तित्व एवं **आत्मप्रभावकारिता** के अध्ययन तक ही सीमित है ।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध सर्वेक्षण विधि पर आधारित है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध में छत्तीसगढ़ राज्य के समाज कल्याण विभाग से प्राप्त आकड़े के आधार पर अनुसंधानकर्ता द्वारा छत्तीसगढ़ के आवासीय विद्यालय में अध्ययन करने वाले कुल 1047 दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

न्यादर्श

न्यादर्श का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया है। अध्ययन हेतु 150 (75 बालक एवं 75 बालिका) दृष्टिबाधित विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

उपकरण

आकड़ों के संकलन के लिए उपकरण के रूप में व्यक्तित्व के मापन हेतु महेश भार्गव द्वारा निर्मित (संशोधित) **आयामी व्यक्तित्व मापनी (2017)** का प्रयोग किया गया हैं। दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के **आत्मप्रभावकारिता** के मापन के लिए एस. दहिया एवं एन.कुमारी (2018) द्वारा निर्मित उपकरण का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांकों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय तकनीक मध्यमान, मानक विचलन एवं द्विदिश प्रसरण विश्लेषण (**TWO WAY ANOVA**) का प्रयोग किया गया है ।

H_{0-1} "दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के आयाम उत्साही - गैरउत्साही, लिंग एवं इनकी अन्तःक्रिया का आत्मप्रभावकारिता पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा"।

तालिका क्रमांक 1.0

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के आयाम उत्साही-गैरउत्साही, लिंग एवं इनकी अन्तःक्रिया का आत्मप्रभावकारिता पर प्रभाव

प्रसरण का स्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्रता की कोटि	वर्गों का मध्यमान	एफ मान
उत्साही-गैरउत्साही	3569.460	1	3569.460	7.147**
लिंग	996.048	1	996.048	1.994NS
उत्साही-गैरउत्साहीx लिंग	427.078	1	427.078	0.855NS
त्रुटि	72921.387	146	499.462	
योग	2832384	150		
संशोधित योग	78617.493	149		

**=0.01 स्तर पर सार्थक NS= सार्थक नहीं

तालिका क्रमांक 1.0 से स्पस्ट है कि आत्मप्रभावकारिता के लिए व्यक्तित्व के आयाम उत्साही-गैरउत्साही के F का मान 7.147, df = 1/146 पाया गया । f का यह मान 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया । जिससे निष्कर्ष निकलता है कि व्यक्तित्व के आयाम उत्साही-गैरउत्साही का आत्मप्रभावकारिता पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

पुनः यह जानने के लिए कि, उत्साही व्यक्तित्व वाले दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की आत्मप्रभावकारिता अच्छी थी या गैर-उत्साही व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की, इस उद्देश्य के लिए उत्साही एवं गैरउत्साही व्यक्तित्व वाले दृष्टिबाधित विद्यार्थियों केआत्मप्रभावकारिता के मध्यमान एवं मानक विचलन की संगणना की गई जिसे तालिका में दर्शाया गया-

तालिका क्रमांक 1.2

विद्यार्थियों के आत्मप्रभावकारिता प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन

व्यक्तित्व	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
उत्साही	58	141.90	20.154
गैर- उत्साही	92	131.48	23.80

तालिका से स्पष्ट है कि उत्साही व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की आत्मप्रभावकरिता प्राप्तांको का मध्यमान 141.90 और मानक विचलन 20.154 इसी प्रकार गैर-उत्साही व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की आत्मप्रभावकारिता प्राप्तांकों का मध्यमान 131.46 और मानक विचलन 23.80 पाया गया जो दर्शाता है

कि उत्साही व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की आत्मप्रभावकारिता गैर-उत्साही व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों से अधिक थी।

उत्साही-गैरउत्साही व्यक्तित्व वाले दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिंग का आत्मप्रभावकारिता के प्राप्तांकों पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया अतः उत्साही-गैरउत्साही व्यक्तित्व वाले दृष्टिबाधित बालक एवं बालिकाओं की आत्मप्रभावकारिता एकसमान पाई गई ।

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के आयाम उत्साही-गैरउत्साही, लिंग एवं इनकी अंतःक्रिया का आत्मप्रभावकारिता पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया अतः उत्साही-गैरउत्साही व्यक्तित्व वाले दृष्टिबाधित बालक एवं बालिकाओं की आत्मप्रभावकारिता एक समान पाई गई ।

निष्कर्ष

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के आयाम उत्साही-गैरउत्साही का आत्मप्रभावकारिता पर सार्थक प्रभाव पाया गया। उत्साही व्यक्तित्व वाले दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की आत्मप्रभावकारिता का मान गैरउत्साही व्यक्तित्व वाले दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के आत्मप्रभावकारिता के मान से सार्थक रूप से अधिक पाई गई । निगम (2011) ने भी अपने शोध में दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को उत्साही पाया । समान परिवेश में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के मध्य सकारात्मक प्रतिस्पर्धा एवं पुरस्कार इन्हे निरंतर उत्साही व्यक्तिव के निर्माण में सहायता करती है और अपने क्षमताओं में विश्वास करते हुए सफलता की दिशा में बढ़ने के लिए स्वप्रेरित करती है ।

Refrences

1ण बंदुरा, ए. (1977). आत्मप्रभावकारिताए व्यवहार परिवर्तन के एक एकीकृत सिद्धांत की ओर मनोवैज्ञानिक समीक्षा। अमेरिकी मनोवैज्ञानिक, 84(2),191-215.

2ण दहिया,एस. एवं कुमारी, एन. (2018). आत्मप्रभावकारिता मापनीए एस.पी. भार्गव, बुक हाऊस, आगरा,1-16.

3ण गहलवात, एस. (2017). सामान्य एवं दृष्टिबाधित किशोरों के व्यक्तित्व एवं मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन। इंटरनेशनल जनरल ऑफ एडवान्स्ड एजुकेशन एन्ड रिसर्च, 2(4). 55-57.

4ण जेनिफर, सी., मकडोनल, एम., एवं क्रूडएन, ए. (2018). दृष्टिबाधित बच्चों के रोजगार अवसर पर उनके परिवहन आत्मप्रभावकारिता के प्रभाव का अध्ययन। जर्नल ऑफ वोकेशनलरी. हाईबीटेसियन, 48(2), 257-260.

5ण कांचीबहोतला, डी., सुब्रमनीयम, एस., एवं कुलकर्णी, एस. (2021). दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक क्षमता के विकास में योग अभ्यास का प्रभाव । ऐनल्ज ऑफ योगा एण्ड फिजिकल थेरेपी,

5(1), 1-3.

6ण कुमार, एस. (2017). दृष्टिबाधित एवं सामान्य विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं आत्मप्रभावकारिता का अध्ययन. एडुक्रिएटर रिसर्च जर्नल, 4(3), 99-103.

7ण संदू, बियांक, पी., मिहाएला, ए., एन्डरीया, सी., निकॉलेट, आर., एवं मारिया, ए. (2021). दृष्टीबाधीतों के शिक्षा एवं व्यक्तित्व का कोविड के संदर्भ में अध्ययन। रिव्यू ऑफ साइकालाजी, 1(1), 195-202.